Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **सिंधु घाटी सभ्यता की धार्मिक जीवन।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

सिंधु घाटी सभ्यता की धार्मिक जीवन।

सिन्धु-घाटी में पाये गये अवशेषों में से किसी के बारे में यह विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इनमें से कोई देव-मन्दिर भी था। परन्तु कुछ मूर्तियों और मुख्यतया विभिन्न मुहरों पर अंकित आकृतियों से हमें यहाँ के निवासियों के धर्म का अनुमान होता है। इन्हीं साक्ष्यों एवं आधारों को मानकर सिंधु सभ्यता के धर्म के 8 तत्वों को समझा जा सकता है।

1. मातृवेवी पूजा : सिंधु सभ्यता में नारी की मिट्टी से बनी हुई मृण्मुर्तियाँ बड़ी संख्या में मिली है जिन्हें मातृदेवी की मूर्तियाँ माना जाता है। हड़प्पा से मिली एक मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा दिखाया गया है,इससे यह मालूम होता है हड़प्पा सभ्यता के लोग धरती को उर्वरता की देवी मान कर इसकी पूजा किया करते थे। एक मुहर पर मातृदेबी को प्रसन्न करने के लिए नरबलि दिए जाने का साक्ष्य भी मिलता है।

2. पशुपति शिव की पूजा : मोहनजोदड़ो से एक पशुपति

शिव की मूर्ति मिली है जो सिंधु सध्यता में शिव पूजा को प्रमाणित करती है। अन्य मुहरों में शिव को, नागधारी, धुनर्धर के रूप में चित्रित किया गया है शिव के ये सारे रूप वर्तमान में भी प्रचलित है।

3. वृक्ष पूजा : सिंधु निवासी वृक्षों में प्रमुखतया नीम और पीपल की पूजा करते थे। मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहर में पीपल की पत्तियाँ दिखाई गई हैं। एक अन्य मुद्रा में पीपल के वृक्ष की दो शाखाओं के बीच एक स्त्री का चित्र है। संभवतः पीपल के पेड़ की उपासना माधुरी देवी की उपासना से संबद्ध रही होगी।

4. पशु एवं नाग पूजा : सिंधु निवासी पशु एवं सर्पों की पूजा करते थे उनकी पूजा किसी भय अथवा देवताओं का वाहन मानकर किया जाता था। पशुओं में साढ सबसे प्रमुख था जिसके कई सारे चित्र मुहरों पर मिले हैं। मोहनजोदड़ो की एक मुद्रा पर देवता के दोनों ओर सर्प की आकृति बनी हुई जो नाग पूजा की पुष्टि करती है।

5. लिंग एवं योनि पूजा : पशुपति शिव के उपासक सिंधु घाटी के प्राचीन निवासी योनि तथा लिंग की प्रतिमा बनाकर प्रजनन शक्ति या सृजन शक्ति के प्रति अपनी

भक्ति भावना को प्रदर्शित करते थे ।

6. जल पूजा : सिंधु सभ्यता में जल पूजन के प्रमाण के लिए मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में प्राप्त जलकुंड के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी वस्तु उपलब्ध नहीं हुई है जिससे कि इस विषय में कोई निश्चयात्मक बात कहीं जा सके। स्नान को धार्मिक अनुष्ठान का दर्जा प्रदान किया गया था। मोहनजोदडो का विशाल स्नानागार इसी उद्देश्य से बनाया गया था।

7. प्रतीक पूजा : श्रृंग स्तम्भ एवं स्वस्तिक के चित्र भी मुहरों पर मिले हैं जो संभवत: किसी देवता के प्रतीक के रूप में पूजे जाते होंगे।

8. अग्निपूजा : लोथल एवं कालीबंगा से हवन कुंडों एवं यज्ञवेदियों का साक्ष्य उपलब्ध होना अग्निपूजा के प्रचलन का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

धार्मिक प्रथाएँ : हड़प्पा के लोगों में जो धार्मिक रीति - रिवाज प्रचलित थे, उसमें से कुछ आज भी हिंदुओं में पाए जाते हैं। मांग में सिंदूर भरना विवाहित हिंदू स्त्रियों के लिए सुहाग का प्रतीक है। हड़प्पा से प्राप्त एक मिट्टी की पट्टी

पर एक महिष का दृश्य चित्रित है जो हमें महिषासुर-मर्दिनी की याद दिलाता है।देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि प्रदान करना,मरणोपरांत जीवन में विश्वास (शवों के साथी उसके उपभोग की वस्तुएँ दफनाना) तथा अंधविश्वास का भी प्रचलन था क्योंकि ताबीजों के प्रयोग के भी साक्ष्य मिले हैं।

References: Internet & Competitive books.